हिम्मत नहीं हारनी चाहिए

यशी चौधरी, ऐमिटी इंटरनेशनल स्कूल
गुरुग्राम सैक्टर 46, कक्षा 6 एच

रमेश अपने दोस्त आरव के साथ एक छोटे से कस्बे रामपुर में रहता है। रामपुर बहुत खूबसूरत जगह है। यहाँ खूब हरियाली है, बच्चे खेलते रहते हैं और सभी लोग एक-दूसरे की मदद करते हैं। हम दोनों ज्ञानदीप विद्यालय में पढ़ते थे। यह स्कूल बहुत अच्छा है और यहाँ के सभी शिक्षक बहुत अच्छे हैं। आरव मेरी ही कक्षा में पढ़ता था। वह बहुत मेहनती लड़का था, लेकिन पढ़ाई में थोड़ा कमजोर था- खासकर गणित विषय में। जब भी गणित की परीक्षा होती, वह डर जाता। परीक्षा में गणित में उसके अंक कम आते थे। कई बार तो उसके अंक इतने कम होते कि वह उदास हो जाता। पहले मुझे लगता था कि आरव मेहनत नहीं करता लेकिन फिर मैंने देखा कि वह रोज देर रात तक गणित की किताब लेकर बैठा रहता। वह अपनी कॉपी में बार-बार सवाल हल करता, फिर भी गलती हो जाती। एक दिन मैंने उससे पूछा, "तुम इतनी मेहनत करते हो, फिर भी अंक क्यों कम आते हैं?" उसने धीमे से कहा, "पता नहीं यार, मैं कोशिश तो बहुत करता हूँ लेकिन दिमाग में घुसता ही नहीं। पर मैं हार नहीं मानूँगा।" मैंने सोच लिया कि मैं आरव की मदद करूँगा। अब हम स्कूल के बाद रोज एक घंटे साथ बैठते और मैं उसे गणित समझाता। धीरे-धीरे वह समझने लगा। जब भी वह सवाल सही करता, उसकी आँखों में चमक आ जाती।

धीरे-धीरे वार्षिक परीक्षा का समय आ गया। आरव घबराया हुआ था। मैंने उसे समझाया कि डरने की जरूरत नहीं, इस बार उसके अच्छे अंक आएँगे। गणित की परीक्षा आरव ने पूरे मन से दी। तीन हफ्ते बाद परिणाम आया। जब आरव का नाम आया, उसने धीरे से रिपोर्ट कार्ड लिया। पहले तो वह शांत रहा, फिर जोर से चिल्लाया, "रमेश! मैंने गणित में 75 अंक पाए हैं!' मैं खुशी से उछल पड़ा। आरव ने दौड़कर मुझे गले लगा लिया। शिक्षक भी आरव से बहुत खुश हुए। प्रधानाचार्य ने आरव को स्टेज पर बुलाकर कहा, "बच्चो! आरव ने इस बात का उदाहरण पेश किया है कि मेहनत और लगन से सब कुछ संभव है"। उस दिन मुझे भी एक बात समझ में आई कि अगर ठान लो और लगातार मेहनत करो तो कोई भी काम असंभव नहीं। पर कहानी यहीं खत्म नहीं होती। गणित में सफलता के बाद आरव और भी आत्मविश्वासी हो गया। अब वह हर विषय में अच्छा करने लगा। वह स्कूल में भाषण प्रतियोगिता में भी भाग लेने लगा, जबकि पहले वह बहुत शर्मीला था। एक बार स्कूल में 'भारत के वीर' विषय पर भाषण प्रतियोगिता हुई। आरव ने उसमें भाग लिया। वह रोज अभ्यास करता, मुझसे पूछता कि कैसे बोलना है, कहाँ रुकना है, कैसे शब्दों पर जोर देना है। मैं भी उसकी मदद करता। प्रतियोगिता के दिन वह बिल्कुल अलग लग रहा था आत्मविश्वास से भरा हुआ। आरव स्टेज पर गया, माइक पकड़ा और बोला, नमस्ते, मैं आरव हूँ, और आज मैं आपको भारत के वीरों की कहानी सुनाने आया हूँ... उसका भाषण इतना अच्छा था कि सभी तालियाँ बजाने लगे। प्रतियोगिता के बाद उसे पहला पुरस्कार मिला। अब वह स्कूल के सबसे प्रिय छात्रों में से एक बन गया था। उसे देखकर सब बच्चे प्रेरणा लेने लगे।

यह अंत नहीं था

आयुष आर्य, ऐमिटी इंटरनेशनल स्कूल
रायपुर, कक्षा 10 ए

उसे नहीं पता था कि बारहवीं कक्षा के बाद उसका लक्ष्य क्या होगा? उसके माता-पिता के अनुसार मेडिकल प्रवेश परीक्षा एक मात्र ऐसी परीक्षा है, जो अच्छे भविष्य की गारंटी देती है। उसने एक प्रसिद्ध कोचिंग संस्थान में बारहवीं की परीक्षा के एक हफ्ते बाद दाखिला ले लिया। उसे एक हॉस्टल में सौ लोगों के साथ रहना था। उन सभी को उम्मीद थी कि वे सब इस परीक्षा में सफल होंगे। असल में यह एक भेड़चाल थी। दस महीने की कड़ी मेहनत तथा रातों की नींद हराम करने के बाद उसे लगने लगा था कि अब वह परीक्षा के लिए तैयार है। पर जिस दिन उसने परीक्षा लिखी, उसी दिन वह समझ गया था कि परीक्षा पूरी तरह बिगड़ चुकी है। वह प्रवेश परीक्षा में असफल हो गया था।

अगले कुछ हफ्ते उसके लिए बहुत कठिन थे। उसे ऐसा लगा कि उसने अपने माता-पिता का सिर नीचा कर दिया है। वह यह भी मानने लगा था कि अब वह किसी काम का नहीं है। उसका भविष्य कहीं अंधकार में खो चुका है।

कुछ लोगों के समझाने तथा सलाह के बाद उसने फर्ग्युसन कॉलेज, पुणे में भूगर्भ शास्त्र में दाखिला के लिए आवेदन दिया। उसे सफलता मिली। यह उसके जीवन में नए बदलाव की शुरूआत थी। धीरे-धीरे सब कुछ बदलने लगा। उसे अहसास हुआ कि उसकी रुचि पर्यावरण के बारे में जानने की है। उसने पर्यावरण प्रबंधन में मास्टर डिग्री के लिए फॉरेस्ट रिसर्च इंस्टीट्यूट, देहरादून में दाखिला लिया। साथ ही, सभी सेंट्रल यूनिवर्सिटीज़ में प्रवेश परीक्षा के लिए आवेदन दिया। वह जो भी पढ़ता उसमें उसे मजा आने लगा था। अंततः परिणाम आ ही गया। उसने सेंट्रल यूनिवर्सिटीज़ की प्रवेश परीक्षा में प्रथम और फारेस्ट रिसर्च इंस्टीट्यूट में प्रवेश परीक्षा में बारहवाँ स्थान प्राप्त किया। उसने फारेस्ट रिसर्च इंस्टीट्यूट का चयन किया। उसमें आने के बाद उसके सामने भविष्य के अनेक दरवाजे खुल गए। वह खुश है क्योंकि वह जो मेडिकल प्रवेश परीक्षा में फेल हुआ था, यह अंत नहीं था, उसकी नई शुरूआत थी

पुरुस्कार

वासवी महापात्रा, ऐमिटी इंटरनेशनल स्कूल, गुरुग्राम सैक्टर 43, कक्षा 6 ई

रेखांकन: रितिशा बंसल, ऐमिटी इंटरनेशनल स्कूल, गुरुग्राम सैक्टर 43, कक्षा 9 ए

देवापुर गाँव में रंगनाथ और माधवी नामक दंपत्ति रहते थे। रंगनाथ व्यापारी था और माधवी भोली-भाली गृहिणी। रंगनाथ माधवी को समझाता था, "तुम भोली हो इसलिए दूसरों से ज्यादा बात मत किया करो।" एक बार रंगनाथ को किसी दूर गाँव जाना पड़ा। उसने माधवी को समझाया, "गाँव में आजकल चोरियाँ हो रही हैं, तुम अजनबियों से ज्यादा बात मत करना।"

रंगनाथ चला गया। रात को माधवी घर में अकेली सो रही थी। किसी ने दरवाजे पर दस्तक दी। माधवी ने किवाड़ खोले। दो डाकू घर में घुस आए। उनके पास कई गठरियाँ थीं। डाकू छिपने की जगह ढूँढते बोले, "सिपाही हमें खोज रहे हैं, तुम उन्हें हमारा पता मत बताना।" थोड़ी देर बाद सिपाही आए। उन्होंने माधवी से चोरों के बारे में पूछा। माधवी को पति की बात याद आई कि किसी से बात नहीं करनी तो उसने 'न' में अपना सिर हिलाया। सिपाही वापस लौट गए।

थोड़ी देर बाद दोनों चोर कमरे में आ गए और आपस में कहने लगे, "हम चोरी का माल यहीं पर बाँट लेंगे। यह औरत शायद गूंगी है। हमारा भेद किसी पर प्रकट न होगा।" पर चोरी का सामान दोनों में बराबर हो उसके लिए दोनों चोरों ने माधवी से कहा, "सुनो बहन! तुम इस धन को हम दोनों के बीच बराबर बाँटकर दो। इसमें से थोड़ा हिस्सा हम तुम्हें भी देंगे।"

माधवी ने स्वीकृति सूचक सिर हिलाया और उन्हें बगल का कमरा दिखाते हुए इशारा किया, जिसका मतलब था कि तुम दोनों उस कमरे में जाकर बैठ जाओ। ज्यों ही वे दोनों कमरे के अंदर गए, माधवी ने दरवाजे की कुंडी लगा दी और ताला लगा दिया। इसके बाद उसने अँगीठी जलाई और उसमें लाल मिर्च डाल दी और बरामदे में जाकर लेट गई। डाकू लाल मिर्च के धुएँ से परेशान हो बेहोश-से हो गए।

सवेरा होते-होते रंगनाथ घर लौट आया। माधवी ने रात की सारी घटना अपने पति को बताई। सारी बात सुन रंगनाथ सिपाहियों को बुला लाया और डाकुओं को उन्हें सौंप दिया। सबने माधवी की तारीफ की। डाकुओं को पकड़वाने के लिए माधवी को पुरस्कार भी दिया।

लकड़हारे का कबूतर

अक्षिता सरोज, ऐमिटी इंटरनेशनल स्कूल, वृन्दावन योजना, लखनऊ, कक्षा 8 बी

रेखांकन: पलक वर्मा, ऐमिटी इंटरनेशनल स्कूल वृंदावन योजना लखनऊ, कक्षा 11 ए

एक पहाड़ी पर विक्रमपुर नाम का छोटा सा राज्य था। वहाँ का राजा ईमानदार और कर्तव्यनिष्ठ था। विक्रमपुर राज्य में ही एक लकड़हारा भी रहता था। उसके पास एक कबूतर था। कबूतर बहुत होशियार था। सभी उस कबूतर के हुनर से परिचित थे। वह राज्य में एक-दूसरे के संदेश पहुँचाने का काम करता था। इससे लकड़हारे की थोड़ी आमदनी भी हो जाती थी। यह कबूतर राज्य का सर्वश्रेष्ठ संदेशवाहक था। जब राजा ने कबूतर की यह विशेषता सुनी तो उसने लकड़हारे को कबूतर के साथ दरबार में बुलाया और कहा, "मैंने तुम्हारे कबूतर की बहुत तारीफ सुनी है, मैं इसे अपना शाही कबूतर बनाना चाहता हूँ। इसे मुझे दे दे। बोलो इसकी, क्या कीमत लोगे?"

न चाहते हुए भी लकड़कारे ने अपना कबूतर राजा का सौंप दिया और बदले में कोई धन राशि लेने से इनकार कर दिया। उसने कहा, "महाराज यह कबूतर मेरी दुनिया है। मेरे लिए इससे मूल्यवान कुछ भी नहीं।" राजा ने कहा कि वह लकड़हारे की मर्जी के बिना उसका कबूतर नहीं ले सकता। लकड़हारा राजा की जय-जयकार करते हुए कबूतर के साथ अपने घर लौट गया। एक दिन विक्रमपुर के दुश्मन राज्य ने उस पर हमला करने की योजना बनाई। विक्रमपुर के राजा इस बात से बेखबर थे क्योंकि उन्होंने हमेशा सभी राजाओं से मित्रतापूर्ण व्यवहार किया था। उनकी नीति किसी भी राज्य को नुकसान पहुँचाने की नहीं थी।

एक दिन लकड़हारा जंगल में लकड़ी काटने गया। वहाँ उसे दुश्मन राज्य के सैनिकों ने पकड़ लिया और पेड़ से बाँध दिया। कुछ देर बाद लकड़हारे का कबूतर उसके कंधे पर आकर बैठ गया। लकड़हारे ने कबूतर को निर्देश दिया कि वह राजा के पास जाकर उन्हें बताए कि पड़ोसी राज्य ने उन पर हमला बोल दिया है और विक्रमपुर खतरे में है। कबूतर उड़कर राजा के पास पहुँचा। राजा अपने दरबार में नृत्य का मजा ले रहे थे। जैसे ही राजा की दृष्टि कबूतर पर पड़ी, उन्होंने नृत्य रुकवाया और कबूतर को अपने हाथ पर बैठने का इशारा किया। पर कबूतर दरबार में इधर-उधर उड़ने लगा। राजा ने अपने मंत्री से कबूतर की इस हरकत की वजह पूछी। मंत्री कबूतर की बुद्धिमानी से परिचित था, उसने कहा कि महाराज यह कबूतर बेवजह किसी के पास नहीं आता। इसके यहाँ आने का कोई न कोई कारण अवश्य होगा। हमें इसका पीछा करना चाहिए। शायद यह हमें कुछ बताना चाहता है। राजा को मंत्री की बात उचित लगी। राजा ने अपने सैनिकों के साथ कबूतर का पीछा किया। कबूतर पहाड़ी के नीचे जंगल की ओर जा रहा था। राजा ने सैनिकों से कबूतर का पीछा करने को कहा।

नीचे जंगल में राजा को दुश्मन राज्य के सैनिक नजर आए। उन्हें देखते ही राजा कबूतर का इशारा समझ गए। राजा ने तुरंत अपनी सेना को दुश्मन सैनिकों को बंदी बनाने का आदेश दिया। कुछ ही घंटों में दुश्मन राज्य के सैनिकों को गिरफ़्तार कर लिया गया। विक्रमपुर के सैनिकों को वही लकड़हारा पेड़ से बँधा दिखाई दिया जो कबूतर का मालिक था। उन्होंने राजा को इस बारे में सूचित किया। राजा ने अपने सिपाहियों को आदेश दिया कि वे लकड़हारे को तुरंत मुक्त कराएँ। राजा लकड़हारे की राज्य के प्रति वफादारी से खुश होकर उसे अपने राज्य का सम्माननीय नागरिक घोषित किया और कबूतर को बहादुर सैनिक का दर्जा दिया।